आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-73 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून-जुलाई 2018 | मूल्य - 5 रूपए

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का स्कूल जाने का सपना हुआ साकार

बातूनी रिपोर्टर: राजू, सूरज, शुभम, रूस्तम व रिपोर्टर: शम्भू, दीपक, ज्योति व पूनम

बालकनामा का यह अंक जो आपके हाथ में है, यह एक नई सोच के साथ उभरकर सामने आया है। इसमें आप पढ़ेंगे और जानेंगे कि किस तरह सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अनगिनत परिस्थितियों/समस्याओं से जूझते हुए अपनी जिंदगी की नई शुरूआत की है, जहां उनका पहला कदम स्कूल की ओर बढ़ा है। इसके चलते उनके चेहरों पर मासूमियत सी मुस्कान नजर आई।

प्रमाण-पत्र न होने की दशा

अक्सर हमारे पत्रकार द्वारा हमें यह जानकरी प्राप्त होती है कि जो सड़क एवं फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे हैं उनके पास कोई प्रमाण पत्र न होने के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जैसे कि विद्यालय में दाखिला न हो पाना, पहचान न मिल पाना आदि। क्योंकि इनके रहने का कोई ठिकाना नहीं होता। रोजगार की अनिश्चितता की वजह से यह बच्चे अपने परिवार के साथ कभी भी एक स्थान पर ठहरते नहीं हैं। इन परिस्थितियों से जूझते हुए जब वह विद्यालय में दाखिला लेने के लिए पहुंचते हैं, तो विद्यालाय प्रशासन इन्हें दाखिला देने से इन्कार कर देता है। कुछ बच्चों का कहना है कि जब हमारे माता-पिता इस परिस्थिति का समाधान निकालने के लिए आधार कार्ड बनवाने पहुंचे, तो आधार कार्ड बनाने वाले कर्मचारियों ने बताया कि हम लोग आपका आधार कार्ड तब ही बना सकते हैं, जब आप अपने निवास का पूरा पता लेकर आएंगे। यही कारण है कि काफी बच्चों का विद्यालाय जाने का सपना, एक सपना ही बनकर रह जाता है। उनके माता-पिता चाहकर भी अपने बच्चों का दाखिला नहीं करा पाते हैं।

स्कूल आने-जाने की समस्या

हमारे पत्रकारों के अनुसार हमें यह जानकारी मिली है कि रिंग रोड के आस-पास काफी झुग्गी-झोपड़ियां हैं, जहां लोगों को हर समय यह भय बना रहता है कि कहीं वह किसी वाहन का शिकार न बन जाएं। वहीं दूसरी ओर बच्चों का विद्यालाय भी है, जहां तक पहुंचने के लिए उन्हें सड़क पार करनी होती है। इस कारण अक्सर बच्चे विद्यालय जाते हुए घबराते हैं। इसी विषय को लेकर हमारे पत्रकार ने कुछ बच्चों से बातचीत की तो पता चला कि इस भय के चलते न तो माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय भेजना चाहते हैं, न ही बच्चे खुद जाना चाहते हैं। माता-पिता का कहना है कि ऐसी जगह विद्यालय भेजकर बच्चों की जिंदगी को खतरे में डालने से अच्छा है कि वह किसी होटल या ढाबे पर जाकर कुछ पैसे कमा लें। पत्रकार ने बताया कि माता-पिता का यह भी कहना है कि हमारे समाज में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो सड़क पर वाहन चलाते समय सड़क के नियमों का पालन नहीं करते हैं और वाहन इतनी तेज रफ्तार से चलाते हैं, जरा सी गलती होते ही किसी के साथ कोई भी दुर्घटना हो सकती है। पहले भी यहां कई दुघर्टनाएं हो चुकी हैं। इस भय में बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे हैं।

पारिवारिक समस्या

भ्रमण के दौरान पत्रकार को कुछ इस तरह की पारिवारिक समस्या की जानकारी मिली कि जो परिवार सड़क तथा रैन बसेरे के अंदर रहते हैं वह अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों से जबरन भीख मांगवाने का कार्य करवाते हैं। वह अपने बच्चों को कभी शिक्षा की ओर बढ़ते हुए देखना ही नहीं चाहते हैं। जब हमने बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने सुझाव दिया कि हम बच्चे पढ़ाई-लिखाई करना चाहते हैं। हमें भीख मांगना पसंद नहीं है लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं। अगर हम भीख मांगने के लिए नहीं जाएंगे तो हमारे माता-पिता हम बच्चों पर अत्याचार करेंगे। इस भय से चिंतित होकर हम बच्चे कभी शिक्षा की आरे ध्यान ही नहीं दे पाए और लोगों के सामने अपने हाथ फैलाकर भीख मांगते रहे।

जातिप्रथा भेदभाव

वर्तमान में जातिप्रथा को लेकर काफी भेदभाव चल रहा है। जो बंजारे जाति के लोग होते हैं, वह अपने बच्चे को पढ़ा नहीं सकते हैं। उनका सिर्फ यह काम है कि वह इधर उधर से मांगकर अपने बच्चों की परवरिश करते हैं। यह बंजारा जाति अपने घुमक्कडी स्वाभाव के कारण एक जगह काफी समय तक जमकर नहीं रहते हैं जिस कारण इनका कोई भी स्थाई निवास नहीं बन पाता है। इसलिए इनकी कोई स्थायी पहचान न होने के कारण लोग इनसे भेदभाव करते हैं। यही कारण है कि इनका कोई पहचान पत्र नहीं बन पा रहा है, जिसकी वजह सेइनके बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं।

प्रमाण-पत्र न होने की दशाए स्कूल आने-जाने की समस्याए पारिवारिक समस्याए जातिप्रथा भेदभाव; इन सभी परेशानियों से बच्चों को मुक्ति दिलाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों से जैसे दक्षिण दिल्लीए नोएडाए गुड़गांव आगरा व लखनऊ - कुल 723 बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाया गया और वर्तमान में यह सभी बच्चे रोजाना स्कूल जाते हैं और यह अपनी जिंदगी में बहुत खुश हैं।

हम आपके सामने इन सभी स्थानों के आंकड़े पेश कर रहे हैं।

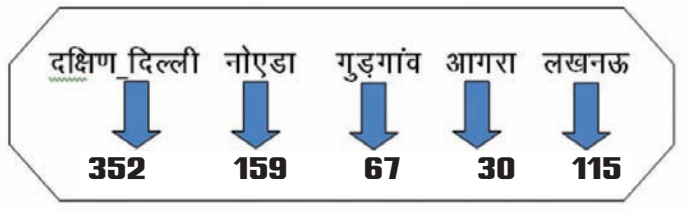

सड़क एवं कामकाजी बच्चे, जो स्कूल जाने लगे, उनके अनुभव

10 वर्षीय मानव, जो बादशाहपुर गुड़गांव में रहता है। मानव के पिताजी का कोई अता-पता नहीं है। माताजी कोठी में काम करती हैं, जिससे उनका घर चलता है। मानव पूरे दिन बादशाहपुर बस्ती के आस-पास खेत में इधर-उधर खेलता रहता था, या कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए इधर-उधर भटकता रहता है। बस्ती के लोग भी मानव से बहुत दुखी हैं; क्योंकि मानव बस्ती में रहने वाले लोगों को भी बुहत परेशान करता है लेकिन वर्तमान में मानव बस्ती में नजर ही नहीं आता है; क्योंकि वह स्कूल जाने लगा है। मानव का कहना है कि मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है। पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ मेरे दोस्त भी बन गए हैं।

12 वर्षीय सूरज जो अपने परिवार के साथ बादशाहपुर गुड़गांव में रहता है। परिवार की स्थिति बहुत खराब है। क्योंकि कुछ साल पहले उसके पिताजी का एक दुर्घटना में पैर कट गया था, जिसकी वजह से वह कोई कामकाज नहीं कर पाते हैं। वह अपने घर में ही रहते हैं। इस परेशानी से जूझते हुए सूरज की मम्मी दूसरों के घरों में काम करने लगीं और सूरज भी पूरे दिन अपने पिताजी के मल-मूत्र की साफ-सफाई करने में हाथ बंटाता है। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह स्कूल जाकर पढ़ाई-लिखाई कर पाएगा। वह हिम्मत हार चुका था। हमारी टीम के संपर्क में आने के बाद सूरज अब कुशलपूर्वक स्कूल जा रहा है और साथ ही घरेलू कामकाज तथा पिताजी का भी खयाल रखता है। शेष पृष्ठ 2 पर

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संपादकीय

बालकनामा का यह अंक, जो आपके हाथ में है, इसमें आप पढ़ेंगे और जानेंगे कि किस तरह सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अनगिनत परिस्थितियों/समस्याओं से जूझते हुए अपनी जिंदगी की नई शुरूआत की है, जहां उनका पहला कदम स्कूल की ओर बढ़ा है। बालकनामा के समर्पित एवं जुझारू साथियों की कड़ी मेहनत और पहल से प्रमाण-पत्र न होने की दशाए स्कूल आने-जाने की समस्याए पारिवारिक समस्याए जातिप्रथा भेदभाव; इन सभी परेशानियों से बच्चों को मुक्ति दिलाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों से; जैसे दक्षिण दिल्लीए नोएडाए गुड़गांव आगरा व लखनऊ - कुल 425 बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाया गया। वर्तमान में यह सभी बच्चे रोजाना स्कूल जाते हैं। यह बच्चे अपनी जिंदगी में बहुत खुश हैं। ये सभी बच्चे सरकारी स्कूलों में दाखिला लेकर अपना भविष्य संवार रहे हैं। 10 वर्षीय मानव, 12 वर्षीय सूरज, 13 वर्षीय राजू, 10 वर्षीय नईम, 11 वर्षीय प्रीती, 12 वर्षीय शाहरुख, 11 वर्षीय हिना आदि जो अलग-अलग क्षेत्रों और शहरों से हैं, ने अपने बारे में जो जानकारियां हमारे साथ साझा कीं, हमने उन्हें इस अंक में आप पाठकों के साथ साझा करने के लिए प्रकाशित की हैं। उम्मीद है आप पाठकों को हमारी पहल पसंद आई होगी। हमारी इस पहल में यदि आप सुधी पाठकों के कुछ सुझाव, अनुभव या सहयोग हों, तो कृपया उन्हें हमारे साथ जरूर साझा करें। आपके सुझावों और सहयोग से हो सकता है कुछ और बच्चों की जिंदगी संवर सके।

बलकनामा टीम

संपादकीय टीम

गरीबी के चलते गर्भ का सौदा करते माता-पिता

बातूनी रिपोर्टर भोलू व रिपोर्टर शम्भू दक्षिण दिल्ली

भूतकाल में हमें अक्सर यह सुनने को मिलता था कि हमारे समाज में बेटी को गर्भ में ही मार दिया गया, लेकिन वर्तमान में हमें एक ऐसी जानकारी मिली है जिसे सुनकर आप भी चैंक जाएंगे। हमें पता चला कि जो माता-पिता सड़क पर रहते हैं, उनके खाने कमाने का कोई जरिया नहीं होता है, वह दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद भी इतना पैसा इक्ट्ठा नहीं कर पाते हैं, जितना उनके परिवार का खर्चा चलाने के लिए जरूरी होता है। इसलिए वे एक नया तरीका अपना रहे हैं। आइए जानते हैं कि वह तरीका क्या है। पता चला है कि दो महिलाएं, जो रैन बसेरा तथा झुग्गी में रहती थीं, उन्होंने गर्भ में ही बच्चा बेच दिया, ताकि उनकी पारिवारिक स्थिति में सुधार आ सके और साथ ही साथ पारिवारिकता से छुटकारा पा सकें। झुग्गी की एक महिला ने अस्पताल में बच्चे का जन्म होने से पहले ही उसे बेच दिया, लेकिन उस वक्त दो बच्चों ने जन्म लिया, तो वह व्यक्ति दोनों बच्चों को लेकर चला गया; क्योंकि जिस व्यक्ति ने उस बच्चे को खरीदा उसका कहना था कि मैंने एक बच्चे की बात नहीं की थी, मैंने यह बोला था कि गर्भ में जो पल रहा है, लड़का या लड़की वह मेरा होगा। इसलिए यह दोनों बच्चे मेरे हुए। बड़े ही दुख की बात यह है कि मां को उन बच्चों की शक्ल भी देखने को नहीं मिली। वहीं दूसरी ओर रैन बसेरे की एक महिला ने बच्चे का जन्म होते ही अपने बच्चे का सौदा एक लाख में किसी अंजान व्यक्ति से कर दिया, तभी आचानक पुलिस पहुंच गई और बच्चे खरीदने वाले व्यक्ति पर सख्त कार्यवाही हुई, तो वह व्यक्ति पुलिस के सामने गुहार लगाने लगा कि मैंने तो पहले ही उस बच्चे को खरीद लिया था, मगर पुलिस ने उसको कानूनी अपराध बताया। वह व्यक्ति पुलिस को पैसों का लालच देकर उस बच्चे को वहां से ले गया। आखिर यह सोचनीय सवाल है कि माता-पिता इस तरह का सौदा क्यों कर रहे हैं? आखिरकार अपने मासूम बच्चे को बेचने के लिए तैयार क्यों हो रहे हैं? इसका सिर्फ एक ही कारण है, गरीबी। यह लोग ऐसा करने से तभी रुकेंगे जब इनको कोई उचित रोजगार, और रहने के लिए एक सुरक्षित घर मिल जाएगा, जहां यह अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकें। इसके लिए समाज को इनकी मदद के लिए आगे आना होगा।

कब मिलेगी जातिप्रथा और रीतिरिवाजों से आजाद़ी?

रिपोर्टर दीपक पश्चिम दिल्ली

जातिप्रथा वह पुरानी रीतिरिवाज है, जिसे भूतकाल में हमारे पूर्वज माना करते थे, वही सिलसिला आज भी चल जारी है। हमें पता चला कि हमारे समाज में अभी भी 14/15 साल की उम्र के छोटे-छोटे मासूम लड़के तथा लड़कियों के माता-पिता सगाई तय कर देते हैं और लड़कियों के घर वालों से उसी समय दहेज की मांग करते हैं। हमारे पत्रकार ने इस विषय पर छानबीन की, तो पता चला कि उनके यहां यह जातिगत परम्परा है, इसलिए इसमें बदलाव लाना नहीं चाहते हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि यह उचित है? इस दहेज तथा जातिप्रथा की वजह से कई माता-पिता लड़कियों से स्नेहभरी बात तक नहीं करते। उन्हें घृणा की नजरों से देखते हैं। लड़के व लड़कियों में भेदभाव करते हैं। इसीलिए अगर किसी परिवार में लड़के ने जन्म लिया तो वह बहुत खुश होते हैं। जिस घर में लड़की का जन्म होता है, उस घर में ऐसा लगता है कि मातम मन रहा है। कोई भी व्यक्ति खुश नहीं रहता है। काफी परेशानियों का सामना करने के बाद लड़की वाले दहेज देकर सगाई कर भी लेते हैं, लेकिन अगर लड़के को यह लड़की पसंद नहीं है, तो वह शादी करने के बाद भी खुश नहीं रहती है। वह रोजमर्रा की जिंदगी में तमाम परेशानियों का सामना करती है। पत्रकार को इस दौरान एक विशेष जानकारी मिली कि जिन लड़कियों की बचपन में सगाई हो जाती है वह अपने होने वाले पति के अलावा किसी और की तरफ नजर उठाकर नहीं देख सकती है, जबकि लड़के किसी के साथ भी मौज मस्ती कर सकते हैं। उन्हें पूरा अधिकार है दूसरी लड़कियों से बातचीत करने का। लेकिन लड़कियों को इसकी इजाजत नहीं है। अगर गलती से भी यह लड़कियां किसी लड़के से बातचीत करते हुए दिख जाती हैं, तो लड़के उस लड़की से शादी करने से इंकार कर देते हैं और जो भी दहेज में लिया हुआ पैसा होता है वह भी नहीं लौटाते। इसलिए सभी लड़कियां इस बालविवाह के रिवाज से मुक्ति चाहती हैं।

आखिर हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों?

रिपोर्टर ज्योति दक्षिण दिल्ली

रोजी-रोटी की तलाश में अक्सर लोग स्थान बदलते रहते हैं लेकिन काम नहीं मिल सकने के कारण फिर भी लोग भूखे पेट सोने को मजबूर होते हैं। ऐसा ही कुछ पुल के नीचे रहने वाले परिवारों की जिंदगी में नजर आता है। कई परिवार अपने परिवार का गुजारा करने के लिए अक्सर अपनी जन्मभूमि को छोड़कर एक अनजान स्थान पर पहुंच जाते हैं, दुभार्ग्यवश रोजगार न मिलने की वजह से वह अक्सर फुटपाथ एवं सड़कों पर भूखे पेट सोते नजर आते हैं। उनकी यह मजबूरी उनको अलग-अलग प्रकार के कार्य करने पर मजबूर कर देती है, जैसे कि भीख मांगना, कूड़ा-कचरा बीनना व चोरी करना आदि। एक अच्छा मकान लेकर सुरक्षित स्थान पर रहना उनके लिए जीवनभर एक सपना बनकर रह जाता है। इन्हीं परिस्थितियों से जूझते हुए पुल के नीचे रहने वाले बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता पुल के नीचे झुग्गी बनाकर रहते हैं। जैसा कि इस चित्र में दशार्या गया है। जब हम अपने परिवार के साथ रात को साते हैं, तो कुछ लड़के बीयर पीकर पुल के ऊपर बैठ जाते हैं और बीयर पीने के बाद उसकी खाली बोतलों में पेशाब भरकर हमारे ऊपर फेंकते हैं। इन बोलतों से हमारे परिवार के लोगों को कभी-कभी बहुत तेज चोट भी लग जाती हैं। हमारे परिवार के सदस्य जब उनसे ऐसा करने से मना करते हैं तो वह लोग अपने गुप्तांग निकालकर हमारे ऊपर मूत्र करने लगते हैं। यह देखकर हम लड़कियों को बहुत गंदा लगता है। लड़कियों ने अपनी अपील रखते हुए कहा कि आखिर यह लोग हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहे हैं? हम यही चाहते हैं कि वह लोग हमारे साथ इस तरह का दुर्व्यवहार ना करें, हमें कुशलपूर्वक रहने दें।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का स्कूल जाने का सपना हुआ साकार

पृष्ठ 1 का शेष

13 वर्षीय राजू अपनी भूतकाल स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं भी स्कूल जा पाऊँगा। भूतकाल में चाय की दुकान पर काम करता था। मैं जब स्कूल से आते-जाते बच्चों को देखता था, तो मेरा भी मन करता था कि उन बच्चों की तरह स्कूल जा पाऊँ; लेकिन वर्तमान में मेरा यह सपना साकार हो गया है और मेरी माताजी भी बहुत खुश हैं। उसकी माताजी ने बताया कि मुझे बहुत अच्छा लगता है कि सिर्फ मेरा बेटा ही नहीं, बस्ती के सभी बच्चे वर्तमान में रोजना स्कूल जा रहे हैं और शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं।

10 वर्षीय नईम अपने बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि मैं नोएडा में रहता हूं और भूतकाल में मेरी माताजी की मृत्यु हो गई थी, तब मेरे पिताजी मुझसे कूड़ा-कबाड़ा बीनने का कार्य करवाने लगे, जिसकी वजह से मेरा पढ़ाई-लिखाई का सपना टूट गया लेकिन वर्तमान में भईया, दीदी के सहयोग से दूसरी कक्षा में दाखिला ले लिया है और मैं रोजाना स्कूल जाने लगा हूं। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि मैंने बाल मजदूरी से मुक्ति पा ली है।

नोएडा सरफाबाद में रह रही **11 वर्षीय प्रीती** ने बताया कि मेरे माता-पिता अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं, जिसकी वजह से मुझे घर की देखभाल करने में पूरा दिन गुजर जाता था। इस वजह से मैं स्कूल नहीं जा पाती थी लेकिन भईया, दीदी के सहयोग से मुझे स्कूल में दाखिला मिल गया है और अब मैं रोजाना स्कूल जा रही हूं।

12 वर्षीय शाहरुख, अपने परिवार के साथ नोएडा की एक बस्ती में रहता है। शाहरुख अपनी भूतकाल स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि मैं एक दुकान पर काम करता था। जहां पूरा दिन कामकाज में ही गुजर जाता था और पढ़ाई-लिखाई का मौका ही नहीं मिलता था लेकिन मैंने वर्तमान में उस दुकान से छुटकारा पाया और 5वीं कक्षा में मेरा दाखिला हो गया है। अब मैं रोजना स्कूल जा रहा हूं।

11 वर्षीय हिना, जो सराय काले खां में रहती हैं, अपने परिवार के गुजारे के लिए कोठियों में काम करती है, साथ ही किन्नरों का भोजन व घर की साफ-सफाई का कार्य करती है, जिसकी वजह से उनका घर का खर्चा निकल पाता है। यही नहीं वह अपने घर में भी अपनी माताजी का घरेलू कार्य में हाथ बटाती है। वह स्कूल जाने का सपना देखती थी। इन सब परिस्थितियों से जूझते हुए भी वह रोजाना सेंटर आकर पढ़ाई-लिखाई करती थी और उसने ओपन बेसिक एजूकेशन में दाखिला लेकर 5वीं कक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। उसका भूतकाल में जो सपना था, उसने वह वर्तमान में कुशलपूर्वक प्राप्त कर लिया है। सरकारी स्कूल में दाखिला लेकर वह अपना सपना साकार कर पाई।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

यह कैसी आजाद़ी, जहॉ घुट-घुट कर जीने को मजबूर हम?

रिपोर्टर ज्योति दक्षिण दिल्ली

हमारे देश को आजाद्र हुए 71 साल होने को जा रहे हैं। क्या आपको लगता है कि हमारा देश पूरी तरह से आजाद्र हो चुका है। अगर कोई मुझसे पूछेगा तो मैं बोलूगा नहीं; क्योंकि हमारे देश में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे तमाम परेशानियों से भरी रोजमर्रा की जिंदगी जी रहे हैं। आइए हम इस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। हमें पता चला कि जो लड़कियां सड़क पर रहती हैं वह आए दिन नई पीढ़ा से जूझती हैं। देखा गया है कि यह लड़कियां पुल के नीचे पार्क के आस-पास अपने तम्बू बनाकर रहती हैं। जब यह अपने कामकाज से बाहर निकलती हैं, तो कुछ ऑटो-रिक्शा वाले उन्हें देखकर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें सुनकर उन लड़कियों को बहुत बुरा लगता है। एक 16 वर्षीय बालिका का कहना है कि एक दिन वह स्नान कर रही थी, तो एक ऑटो-रिक्शा वाला उसे देखकर अपने गुप्तांग को स्पर्श कर रहा था और जब उसकी नजर उस व्यक्ति की ओर पड़ी, तो वह उसे कुछ पैसे दिखाने लगा और अपनी आंखों से इशारा कर रहा था कि मेरे ऑटो के अंदर आकर बैठ जाओ। यह देखकर उस लड़की ने अपने माता-पिता को बुलाया और उस व्यक्ति के पास पहुंची, तो वह व्यक्ति इस बात से मुकर गया और उसके माता-पिता से कहने लगा कि उनकी बेटी से वह इस तरह का व्यवहार नहीं कर रहा था। आप ही बताइए, क्या इस तरह आजाद्री पा सकता है हमारा देश? क्योंकि आजाद्र तो उस दिन होगा जब सड़क पर रहने वाले हर एक बच्चे को इज्जत व सुरक्षा मिलेगी।

आखिर इस तरह की निगाहें क्यों?

रिपोर्टर: पूनम, आगरा

वर्तमान में लड़कियों पर हद से ज्यादा संदेह किया जाता है, जिस कारण उनके जीवन चक्र में बाधाएं आती है, वह अपने जीवन को खुलकर जीने के बजाय घुट-घुटकर जीती हैं। यह खबर आगरा शहर की है। 14 वर्षीय बालिका ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि हमारे समाज में लड़कियों के साथ काफी भेदभाव किया जाता है, जैसे कि हम लड़कियां जब स्कूल जाती हैं और रास्ते में कोई लड़का हम लड़कियों से बात करता है तो हमारे आस-पास रहने वाले लोग हम लड़कियों को गलत निगाह से देखते हैं। जिसकी वजह से हम लड़कियों को बहुत बुरा लगता है। हमारा कहना है कि कृपया हमें इस तरह गलत नजरों से ना देखें। यह जरूरी तो नहीं होता है कि अगर कोई लड़का हम लड़कियों से बातचीत कर रहा है तो उसके साथ हमारा कोई नाता ही होगा। 15 वर्षीय बालिका अपनी गुजरे वाकया के बारे में जिक्र करते हुए कहती है कि एक दिन मैं अपने स्कूल से लौट रही थी, तभी रास्ते में एक लड़का मिला, जो किसी दूसरे गांव से आया था और वह एक नए स्थान पर जा रहा था। उसको रास्ता मालूम नहीं था, तो मैं उस लड़के को उस स्थान पर पहुंचने के लिए रास्ता बता रही थी, तभी अचानक मेरे चाचाजी ने देख लिया और हमारे घर जाकर हमारे माता-पिता से बोल दिया कि मैं किसी अनजान लड़के साथ घूम रही थी। जब मैं घर गई तो मेरी माताजी ने मुझसे पूछा कि आज तुम किस के साथ घूमकर आई हो? यह बात सुनकर मुझे बहुत अजीव लगा कि मैं तो आज पूरे दिन स्कूल में थी, लेकिन मेरी माताजी इस तरह की बात क्यों कह रही हैं, इतने में ही मेरे पिताजी एक डन्डा लेकर आ गए और मुझे पीटना शुरू कर दिया। मुझे फिर भी समझ नहीं आ रहा था कि मेरे पिताजी मुझें क्यों मार रहे हैं। जब मेरी मां मुझे पिताजी की मार से बचाने आईं, तो मेरे पिताजी बोले कि यह पढ़ाई-लिखाई करने नहीं जाती है, पूरे दिन लड़के के साथ घूमती रहती है। इसे सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ और मैं अपने कमरे में जाकर रोने लगी कि जब मैं किसी लड़के साथ नहीं घूमती हूं, तो मेरे पिताजी इस तरह क्यों बोल रहे है? मैंने तो सिर्फ उस लड़के की मदद की थी ताकि वह सही राह चल सके। मेरा मानना है कि यह सिर्फ मेरे घर की परेशानी नहीं है। हमारे समाज में रहने वाले हर एक व्यक्ति की निगाहें इसी तरह की है। हम लड़कियां आप सभी से यही सवाल पूछ रही हैं कि आखिर हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया जाता है? क्या हमें किसी से बातचीत करने का अधिकार नहीं है। यह जरूरी तो नहीं होता है कि जो लड़का-लड़की आपस में बातचीत करते हैं उसके साथ कोई चक्कर ही चलता होगा। वह दोनों भाई-बहन भी हो सकते हैं। हम लड़कियां आपसे यही निवेदन करती हैं कि लड़कियों को कृपया इन नजरों से ना देखें, बल्कि हमें आगे बढ़ने का मौका दें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

क्या हमारे परिवार को सुरक्षित रहने का कोई अधिकार नहीं?

बातूनी रिपोर्टर: आंचल व रिपोर्टर: संगीता लखनऊ

हाल ही में पत्रकार को जानकारी मिली कि जो परिवार 12 वर्ष से अपने परिवार के साथ लखनऊ की एक बस्ती में रहते थे, अपने परिवार के गुजारे के लिए तरह-तरह के कार्य करते थे जैसे कि बाजार में सब्जी बेचना, बेलदारी का काम करना आदि; इस काम की बदौलत इनके परिवार का गुजारा कुशलपूर्वक चल रहा था। लेकिन आजकल इस बस्ती में रहने वाले कोई भी व्यक्ति कुशलपूर्वक नहीं हैं; क्योंकि इस स्थान पर सभी झुग्गियों को तोड़ दिया गया है। छानबीन करने के बाद पत्रकार को पता चला कि यह सभी बस्ती वाले रेलवे की पटरियों के किनारे झुग्गी-झोपड़ी बनाए हुए थे। कुछ दिन पहले बस्ती को खाली करने का संदेश आया था और उस संदेश में लिखा था कि इस स्थान को जल्द से जल्द खाली कर दिया जाए, वरना मजबूरन हमें तुम लोगों की झुग्गियों को तोड़ना पड़ेगा। हम लोगों को लग रहा था कि यह लोग ऐसे ही बोल रहे हैं; क्योंकि इससे पहले भी इस तरह के आदेश आ चुके थे, इसलिए बस्ती वालों ने इस बात को नजरंदाज कर दिया। जिसका परिणाम कुछ दिन के बाद इन बस्ती वालों को चुकाना पड़ा। अचानक कार्यवाही हुई और झुग्गियां तोड़नी शुरू कर दी गईं। यहां तक कि झुग्गी के अंदर रह रहे पालतू जानवर; जैसे कि बकरी, गाय, भैंस भी इसका शिकार बन गए। 13 वर्षीय बालिका का कहना है कि हम सभी बच्चे अपने घर से बेघर हो गए हैं। सारा का सारा सामान झुग्गी के अंदर ही दफन हो गया, जिसके कारण खाने-पीने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है। बस्ती में रहने वाले बच्चों की अपील है कि आखिर सरकार हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों करती है? क्या हम बच्चों को अपने परिवार के साथ सुरक्षित रहने का कोई अधिकार नहीं है? हम जिस स्थान पर अपना डेरा जमाते हैं, वहीं पर सरकार आकर अपना आदेश जारी कर हमारी झुग्गी-झोपड़ियों को तोड़ देती है। हम बच्चों का आप सभी से यही निवेदन है कि सरकार हमारे साथ इस तरह का व्यवहार ना करे। कृपया हमें सम्मान के साथ सुरक्षित जीने दें। सरकार हमारे लिए भी आवास की स्थाई और सुरक्षित व्यवस्था करे।

आखिर क्यों चाहती हैं बच्चियां इस काम से मुक्ति?

बातूनी रिपोर्टर मुस्कान व रिपोर्टर शम्भू नोएडा

लगभग 10-12 साल की उम्र के इस बस्ती में कुछ ऐसे बच्चे मिले जो कठिन परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। आइए हम इनके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। हमें पता चला कि उस स्थान के सभी माता-पिता कामकाज के लिए बाहर जाते हैं और 10-12 की उम्र वाले बच्चे घर पर रहकर अपने छोटे भाई-बहन की देख भाल करते हैं और दूसरी ओर उस बस्ती की छोटी-छोटी बच्चियां घर के कामकाज की जिम्मेदारी संभालती हैं। अफसोस की बात है कि कलम-कॉपी की दम्र वाले बच्चों के हाथ में आज झाड़ू-बर्तन नजर आते है। भ्रमण के दौरान बालकनामा के पत्रकार को पता चला कि यह बच्चियां पूरे दिन अपने घरेलू कामकाज में व्यस्त रहती हैं। जैसे कि खाना बनाना, छोटे बच्चों को पूरी तरह से ध्यानपूर्वक रखना। पत्रकार यह देखकर चैंक गए कि इतनी छोटी उम्र में बच्चियां खाना कैसे बना लेती है। जब बच्चियों से बातचीत की तो बच्चियों ने बताया कि पहले हमें खाना बनाने में बहुत तकलीफ होती थी, क्योंकि हम बच्चियों को चूल्हा जलाने के लिए प्लास्टिक जैसे पदार्थों का प्रयोग करना पड़ता था, जिसके कारण हमारे हाथ जल जाते थे। लेकिन वर्तमान में यह बच्चियां काफी होशियार हो चुकी हैं। लेकिन कुछ बच्चियों की अपील है कि हमें इस काम में संतुष्टि नहीं मिलती है, क्योंकि जब हमारे छोटे भाई-बहन रोना शुरू करते हैं तो जल्दी चुप ही नहीं होते हैं। इसलिए हम बच्चियां चाहती हैं कि कोई भइया दीदी हमें मदद करें; ताकि हमारे माता को काम करने नहीं जाना पड़े और वह हमारे साथ घर पर ही रहें और हमारे छोटे भाई-बहनों का ख्याल रखें। हम भी पढ़-लिख कर अपना जीवन संवारना चाहते हैं।

स्कूल जाने को नहीं तैयार सड़क एवं कामकाजी बच्चे

'एक रहस्य'

रिपोर्टरः पूनम, आगरा

हम जिक्र कर रहे हैं आगरा की झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों की। भूतकाल में यह बच्चे स्कूल नहीं जाते थे अपने कामकाज में व्यस्त रहते थे जैसे कि कूडा-कबाड़ा बीनना तथा बाजार में काम करना व ताजमहल के पास खिलौने की समाग्री बेचना। इतनी कड़ी मेहनत करके बच्चे अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। इस वजह से यह बच्चे शिक्षा की ओर नहीं बढ़ पा रहे थे। कुछ महीनों के बाद इनकी जिंदगी में बदलाव नजर आया; क्योंकि बड़ी कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए इन्हें स्कूल में दाखिला दिलाया। सभी बच्चे कुशलपूर्वक स्कूल जाने लगे थे लेकिन वर्तमान में एक भी बच्चा स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं है। यह बात जब पत्रकार को पता चली तो पत्रकार बच्चों से मिलने के लिए उनके पास पहुंचा और यह रहस्य जान निकाला कि आखिर बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाना चाहते हैं। पहले दिन जब पत्रकार की मुलाकात स्कूल जाने वाले बच्चों से हुई, तो वह पत्रकार के सामने कुछ नहीं बोला। वह बच्चा डरा सा महसूस कर रहा था। इसी वजह से पत्रकार दूसरे दिन उन्हीं बच्चों से मिलने पहुंचा और इसी विषय पर चर्चा करना शुरू कर दिया, लेकिन फिर भी कोई बच्चा पत्रकार से बातचीत करने के लिए तैयार नहीं हो रहा था। तभी 14 वर्षीय एक बालिका, एक झुग्गी से निकली और बोली कि आप हमारी परेशानियों को जान कर क्या करोगे? हम चाहकर भी इस परेशानी से नहीं निकल सकते हैं। पत्रकार ने बच्चों से बोला कि अगर आप अपना दुख दर्द हमें नहीं बताओगे तो हम कैसे इस समस्या से निकालने की कोशिश करेंगे? यह बात सुनते हुए उस 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारे स्कूल में अध्यापक हम बच्चों पर अत्याचार करते हैं। जैसे स्कूल में जो भी कूड़ा कचरा फैला हुआ होता है, वह हम बच्चों से साफ करवाते हैं व स्कूल के पेड़ पौधों में पानी भरवाते हैं, जो हम बच्चों को करना बहुत बुरा लगता है। इसलिए हम बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपने अपने अध्यापकजी से नहीं बोला कि यहां हम बच्चे पढ़ाई करने के लिए आते हैं। कामकाज करने नही? 16 वर्षीय बालक ने बताया कि हां हमने बोला था लेकिन अध्यापक जी हम बच्चों पर ही क्रोधित होने लगे कि तुमलोग सिखाओगे हमें डयूटी करना। इसी वजह से हम बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं।

आंधी तूफान से तबाह सड़क एवं कामकाजी बच्चों की अपील

बातूनी रिपोर्टर पिंकी व रिपोर्टर शम्भू नोएडा

जैसे कि हम सभी की जानकारी में है कि हाल ही में दिल्ली तथा नोएडा के कई क्षेत्रों में ऐसा तूफान आया जिसकी वजह से काफी बच्चों की झुग्गी टूट गई हैं। नोएडा में रहने वाले बच्चे अपने बारे में जिक्र करते हुए कहते है कि जिस रात तूफान आया वह रात हम बच्चों के लिए बहुत कठिन रात थी; क्योंकि तूफान इतना तेज था जिसकी वजह से हमारी टीन की झुग्गियां तूफान की लपेट में आ गई थीं। हमारे माता-पिता को भय लग रहा था कि कहीं हम बच्चे इस तूफान के चंगुल में न फंस जाएं। इसलिए हमारे माता-पिता झुग्गी में लगे हुए खम्भे को पकड़ने की सलाह दे रहे थे। आस-पास के बच्चों से बातचीत करने पर बच्चों का कहना था कि वास्तव में वह रात हम बच्चों के लिए बहुत कठिन रात थी। जैसे-तैसे करके वह रात हम बच्चों ने गुजारी। हमारी सारी झुग्गियां टूट चुकी थीं। इस वजह से अगले दिन हमारे माता-पिता अपने कामकाज पर नहीं जा सके और टूटी हुई झुग्गियों की मरम्मत की। इस तूफान की वजह से हमारे घर का राशन भी तूफान कि चपेट में आ गया था और पहनने के वस्त्र भी तूफान में उड़ गए थे। 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम बच्चों को इस तरह की परेशानियों से आये दिन जूझना पड़ता है, इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हम बच्चों के लिए कोई सुरक्षित स्थान बन जाए, जहां हम बच्चों को इस तरह की परेशानियों का सामना ना करना पड़े।

हमें शक की निगाहों से ना देखें

रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

गुड़गांव की एक बस्ती में हमें पता चला कि इस स्थान पर आयेदिन चोरी-चकारी होती रहती है। इसके पीछे भी एक विशेष कारण है। आइए जानते हैं। इस स्थान का नाम हम गोपनीय रख रहे हैं। हमें पता चला कि इस स्थान के सभी लोग बंगाल तथा कोलकाता के रहने वाले हैं। इस स्थान पर काफी झुग्गी-झोपड़ियां टीन की बनी हई हैं। इस स्थान पर सभी परिवार के सदस्य कड़ी मेहनत करते हैं। तब जाकर इनके घर का गुजारा हो पता है। लेकिन देखा गया है कि इस स्थान पर काफी दिनों से चोरी चकारी हो रही है जिसकी वजह से इस स्थान पर रहने वाले सभी लोग संकट में हैं; क्योंकि पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद यह लोग दो पैसे कमाकर लाते हैं। वह भी चोरी हो जाते हैं। जिसकी वजह से कुछ कूड़ा-कबाड़ा बीनने वाले बच्चे बहुत दुखी हैं। इस बस्ती में रहने वाले लोगों की यह अपील है कि इस बस्ती के कूडे-कबाड़े का काम करने वाले बच्चे ही बस्ती में चोरी-चकारी करते हैं लेकिन बच्चों के सूत्रों के अनुसार हमें पता चला कि वह मासूम बच्चे चोरी-चकारी का काम नहीं करते। बल्कि आस-पास रहने वाले व्यक्ति, जो नशा की लत में इधर-उधर घूमते रहते हैं, वही रात को बस्ती में चोरी करते हैं। बस्ती के लोगों का यह मानना है कि प्रतिमाह के अंदर कम से कम सात-आठ घरों में चोरी हो जाती है। इस परेशानी से जूझते हुए कबाड़ा बीनने वाले बच्चे यह गुहार लगा रहे हैं कि उन बच्चों को शक की निगाह से ना देखा जाए। बल्कि उन बच्चों के साथ भी अन्य व्यक्तियों की तरह व्यवहार किया जाए।

एक तो दलदल का भय, दूसरे दुष्ट व्यक्तियों की गलत निगाहें

आखिर कहां जाएं हम झुग्गी निवासी?

रिपोर्टरः पूनम, आगरा

आगरा शहर की एक बस्ती, जिसका नाम गुप्त रखा जा रहा है। इस बस्ती में एक भी शौचालय ना होने के कारण बच्चे तथा बड़े व्यक्ति जंगल-झाड़ की ओर शौच करने के लिए जाते हैं। दुख की बात यह है कि जिस स्थान पर बस्ती निवासी शौच करने के लिए जाते हैं। वहां एक बहुत बड़ा दलदल है, जहां आयेदिन पालतू जानवर जैसे गाय, भैंस, बकरी तथा नशे में धुत व्यक्ति भी गिरते रहते हैं। जिसकी वजह से इस स्थान पर बच्चे शौच करने जाने में बहुत डरते हैं। बच्चों का कहना है कि हम उस स्थान पर शौच करने के लिए जाते हैं। तो हमें ऐसा लगता है कि कहीं हम भी उस दलदल का शिकार नहीं हो जाएं। इस भय में माता-पिता अपने छोटे-छोटे बच्चों को झुग्गी बस्ती के पीछे ही शौच करवाते हैं और दूसरी ओर लड़कियों से बातचीत करने पर पता चला कि उस दलदल के आस-पास कुछ नशे में लिप्त व्यक्ति जुआं खेलते रहते हैं। जिसकी वजह से हम लड़कियों को दिन में शौच करने में बहुत परेशानी होती है। इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए हम लड़कियां काफी अंधेरा होने के बाद शौच करने के लिए उस दलदल की ओर जाते हैं। जिससे हमें दलदल में गिरने का भय रहता है। झुग्गी के निवासियों की पुकार है कि इस परेशानी का जल्द-से-जल्द हल निकाला जाए, ताकि हम झुग्गी निवासी सुरक्षित रहें।

क्या हमें इस पीड़ा से मिलेगी आजाद़ी?

रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

हमारे समाज में महिलाएं एवं मासूम बच्चियों को सम्मान क्यों नहीं मिलता है। यह सवाल आपसे वह महिलाएं एवं बच्चियां पूछ रही हैं जो झुग्गी झोपड़ी तथा सड़क के किनारे अपनी जिंदगी व्यतीत कर रही हैं। इन लोगों का यह गुहार है कि हमें रोजमर्रा जैसी जिंदगी क्यों जीनी पड़ती है। क्या आपके पास इनके सवालों का कोई जवाब है आइए हम विस्तार से जानकारी प्राप्त करें कि आखिर यह महिलाएं एवं बच्चियां क्यों इस तरह के सवाल पूछने के लिए मजबूर हो रही हैं। हमारे पत्रकार ने एक बस्ती के बारे में जानकारी इक्ट्ठा की, कि उस बस्ती में कौन-कौन सी समस्या है। हमें पता चला कि उस बस्ती में बच्चियों के लिए स्नान करने के लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं है उस स्थान पर एक पानी की टंकी है वहीं पर महिलाएं तथा बच्चियां खुले में स्नान करती हैं। जिसकी वजह से उनको अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है जैसे कुछ दुष्ट व्यक्ति अपनी झुग्गियों की दीवार में छेद करके उन्हें स्नान करते हुए देखते हैं तथा उनकी अपने मोबाइल में फिल्म बना लेते हैं। इसी भय की वजह से वह बच्चियां सही प्रकार स्नान भी नहीं कर पाती हैं। इसके अलावा जब भी यह बच्चियां कामकाज के लिए बाहर जाती हैं तो यह दुष्ट व्यक्ति उनके लिए अश्लील शब्द का उपयोग करते हैं जिसकी वजह से वह बच्चियां बाहर निकलते हुए घबराती हैं। इस परेशानियों से जूझती हुई बच्चियां अपनी रक्षा के लिए सरकार से सुरक्षित शौचालय व स्नान की जगह बनाने की अपील करती हैं और चाहती हैं कि उन्हें जल्द से जल्द इस पीड़ा से आजाद़ी प्राप्त हो सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नुक्कड़ नाटक से बच्चों ने जागरूक किया माता-पिता को

बातूनी रिपोर्टरः रोहित व रिपोर्टरः शम्भू, नोएडा

नोएडा की एक बस्ती में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने समूह के दौरान नाटक करके दशार्या कि वर्तमान में माता-पिता किस प्रकार बच्चों को अकेले छोड़कर कामकाज के लिए चले जाते हैं और इस बीच बच्चों की क्या दशा होती है। इसके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। पहले हम इनके भूतकाल के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं कि यह लोग भूतकाल में किस प्रकार अपनी जिंदगी व्यतीत करते थे। भूतकाल में यह लोग अपने परिवार के साथ बंगाल तथा कोलकाता में रहते थे। वहां पर कोई

कमाने का जरिया नहीं था, जिसकी वजह से इनके परिवार कुशलपूर्वक नहीं रह पाते थे। इस कष्ट से मुक्ति पाने के लिए यह लोगों ने निर्णय लिया कि हम अपने स्थान का बदलाव करेंगे और यह लोग अपने परिवार के साथ नोएडा आकर बस गए। नोएडा आने के बाद इन लोगों ने काम की तलाश की, लेकिन कामकाज करने के दौरान जो भी वेतन मिलता था उससे परिवार का सही तरह गुजारा नहीं हो पाता था। इसलिए परिवार के सभी पुरूषों ने निर्णय लिया कि वर्तमान में हम अपनी पत्नियों को भी कामकाज करने के लिए कोठी में भेजेंगे और यहां ऐसे ही हुआ। कुछ ही दिनों के बाद महिलाए भी कोठी में झाड़ू-पोछा का काम करने लगीं। वर्तमान में पुरुष और महिलाओं के कामकाज करने से घर का खर्चा तो अच्छे से चलने लगा लेकिन इस कारण से बच्चे असुरक्षित हो गये। हुआ यूं कि माता-पिता तो अपने कामकाज करने के लिए बाहर जाने लगे लेकिन बच्चे घर पर अकेले ही रहने लगे, जिसकी वजह से पूरे दिन बच्चे इधर-उधर घूमते रहते हैं। कोई भी अननाज व्यक्ति बच्चों को किसी तरह का लालच देते हैं, तो बच्चे दौड़कर उनके पास चले जाते हैं। इसलिए सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने नाटक के माध्यम से वर्तमान स्थिति को दशार्या और माता-पिता को जागरूक किया और यह दिखाने की कोशिश की कि माता-पिता बच्चे की ओर सही नजरियां बनाए रखें।

हम बच्चों को चाहिए, इस परेशानी से मुक्ति

रिपोर्टरः दीपक, पश्चिम दिल्ली

पश्चिम दिल्ली का एक स्थान, जहां रेलवे स्टेशन है, उस स्थान पर अधिकतर सीमेंट का ही कार्य होता है, क्योंकि उस स्थान पर रोज रेलगाड़ी सीमेंट लेकर आती है और कुछ लोग रेलगाड़ी में सीमेंट का उतार-चढ़ाब करते हैं। जिसकी वजह से रेलवे स्टेशन के इर्द गिर्द बसे झुग्गी निवासियों को कठिन परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सुनने में आया था कि जब रेलगाड़ी में मजदूर सीमेंट उतार चढ़ाब करते हैं, तो काफी धूल उड़ती है जिसकी वजह से झुग्गी में रहने वाले बच्चे और लोगों को काफी परेशानी होती है। उस स्थान पर रहने वाले बच्चों का कहना है कि जब आंधी तूफान आता है, तो हमारे माता-पिता भोजन नहीं बना पाते हैं, और इस धूल मिट्टी की वजह से हम बच्चों को सांस लेने में काफी तकलीफ होती है। जब पत्रकार ने माता-पिता से बातचीत की तो पता चला कि वे इस परेशानी से काफी सालों से जूझ रहे हैं लेकिन वह कर भी क्या सकते हैं? अगर वह इस स्थान को छोड़कर कहीं चले गए तो उनके कमाने खाने का जरिया खत्म हो जाएगा। इसलिए वह लोग इस पीढ़ा से जूझ रहे हैं। इस बस्ती में रहने वाले बच्चे तथा माता-पिता दुखी हैं, क्योंकि इस बस्ती में किसी चीज का प्रबंध नहीं है और उनकी इतनी आमदनी नहीं है कि जिससे वे एक अच्छे स्थान पर मकान ले सकें। माता-पिता तथा बच्चे यही गुहार लगा रहे हैं कि उन्हें इन सभी परेशानियों से आजाद्री मिल जाए।

समाज में परिवर्तन, माता-पिता ने उठाए नये कदम

बातूनी रिपोर्टरः समीर व रिपोर्टरः शम्भू, दक्षिण दिल्ली

हमारे बातूनी रिपोर्टर के सूत्रों के अनुसार हमें यह जानकारी प्राप्त हुई कि जो बच्चे पुल के नीचे व रैन बसेरे में रहते हैं, उनके माता-पिता बच्चों पर अत्यधिक अत्याचार करते हैं। आइए हम इसके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। हमारे बातूनी रिपोर्टर ने देखा कि माता-पिता बच्चों को जबरन भीख मांगने के लिए मजबूर करते हैं। अगर वह बच्चे भीख मांगने से इन्कार करते हैं तो उनके माता-पिता बच्चों के साथ गाली-गलौज तथा मार-पीट करते हैं। जब हमारे बातूनी रिपोर्टर ने उन भीख मांगने वाले बच्चों की पीड़ा सुनी तो वह भी खुद घबरा गए। बच्चों ने बताया कि जब हम भूतकाल में भीख मांगने के लिए जाते थे तो थोड़ा बहुत पैसे मिल जाते थे लेकिन जब से हमारी सरकार तथा पब्लिक में जागरूकता बढ़ी है तब से हम बच्चों को भीख में पैसे मिलना मुश्किल होता नजर आ रहा है। क्योंकि वर्तमान में पब्लिक हम बच्चों को भीख में पैसे नहीं देती है और खाने पीने का पदार्थ देती है। जो हमारे माता-पिता को नापसंद है। इसलिए हमारे माता-पिता हम बच्चों पर क्रोधित होते हैं। हमारे माता-पिता का कहना है कि तुम लोग भीख देने वाले व्यक्ति से ये गुहार लगाओ कि हमें भीख में खाने पीने का पदार्थ नहीं चाहिए। हमें पैसों की जरूरत है लेकिन बच्चों का कहना है कि जब हम पब्लिक से पैसे के लिए गुहार लगाते हैं, तो वह हमें पैसे नहीं देते हैं।

क्या बच्चों को फिर से मिल सकेगा अपना खेल का मैदान?

बातूनी रिपोर्टरः नवाब व रिपोर्टरः शम्भू, नोएडा

यह खबर नोएडा की एक बस्ती की है। इस स्थान पर 800 से 900 तक की संख्या में झुग्गी-झोपड़ियां हैं। इसके आस-पास बच्चों के खेलने के लिए कोई स्थान नहीं है, क्योंकि इस बस्ती में रहने वाले कुछ लोग अपनी झुग्गी के आस-पास कूड़ा कबाड़ा रखते हैं और झुग्गी के साथ ही साथ एक बहुत बड़ा नाला है, जहां बच्चे खेल ही नहीं सकते। वह इसलिए, क्योंकि नाला में से बहुत गंदी बदबू आती है। बच्चों के खेलते समय बॉल तथा खेलने का सामान अगर उस नाले में चला गया, तो उसे निकालने में बहुत कष्ट होता है। आप तो जानते ही हैं कि बच्चे खेले वगैर कहां रह पाते हैं। इस स्थान पर रहने वाले बच्चों ने कुछ दिनों पहले यह निर्णय लिया कि हमारी झुग्गियों से दो किलोमीटर की दूरी पर एक पार्क है, हम वहां जाकर खेलेंगे। बच्चों ने अपना इरादा बदल दिया। हुआ यूं कि उस पार्क तक पहुंचने के लिए एक रिंग रोड से होकर गुजरना पड़ता है,

जिसे यह मासूम नन्हें-मुन्ने बच्चे पार नहीं कर पाएंगे; क्योंकि नोएडा के अंदर कुछ ऐसे लोग हैं जो वाहन को बहुत तेजी से चलाते हैं। लालबत्ती होने के बाद भी वाहन को नहीं रोकते हैं। यह मासूम रोज खेलने की उम्मीद लेकर आते हैं, भय वश रिंग रोड पार नहीं कर पाते हैं, और उदासीन होकर अपने घर लौट आते हैं। पहले ऐसा नहीं था। झुग्गी के पास एक मैंदान है? जहां हम बच्चे जीभर के सुबह-शाम खेलते रहते थे लेकिन यह बच्चों का खेलना-कूदना इस बस्ती में रह रहे कुछ बड़े लोगों को पसंद नहीं था। उन व्यक्तियों का मानना है कि बच्चे सुबह-शाम चिल्लाते रहते हैं जिसकी वजह से उन व्यक्तियों को बहुत बुरा लगता है। उन व्यक्तियों को बच्चों का खेलना व शोर-शराबा बिल्कुल पसंद नहीं है। इसलिए उन्होंने झुग्गी में से निकलने वाले गंदे नाले का पानी इस मैदान में छोड़ दिया और लोगों से यह कहा कि झुग्गी का कूड़ा-कचरा तथा गंध इस मैदान में डालो। इसी वजह से यह मैदान गंदे पानी और कूड़ा-कचरा से भरा हुआ है। बच्चे जानना चाहते हैं कि यह लोग हम बच्चों का खेलने का अधिकार क्यों छीन रहे हैं? साथ ही इन बच्चों की गुहार है कि हम तो सिर्फ इतना चाहते हैं कि जो हमने खोया है आप हमें लौटा दें। इस मैदान से कूड़ा-कचरा हटाया जाए और गंदे नाले से जो पानी इस मैदान में बहता है उसे बंद किया जाए, ताकि हम बच्चों को खेल का अपना मैदान फिर से मिल सके।

बच्चों की मांग, नशीले पदार्थ हों पूरी तरह बंद

रिपोर्टरः शम्भू, गुरूग्राम

बालकनामा के पत्रकार ने झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्टर ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया। मीटिंग के दौरान पता चला कि इस बस्ती के बच्चे नशा सप्लाई के काम में फंस चुके हैं। बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से इस खबर में उस स्थान का नाम गुप्त रखा गया है। जानकारी मिली कि इस स्थान पर रहने वाले कोलकाता तथा बंगाल से आकर यहां रह रहे हैं। यह लोग अपना पेट पालने के लिए इस स्थान पर रहकर कामकाज कर रहे हैं। इसी बस्ती में कुछ दुष्ट व्यक्ति, जो काफी समय से इसी स्थान पर रहते हैं, वह कोलकाता तथा बंगाल से आए हुए परिवार के मासूम बच्चों से गलत काम करवाते हैं। इन मासूम बच्चों को चंद पैसे का लालच देकर नशीले पदार्थ जैसे- गांजा, चरस आदि सप्लाई करवाते हैं। यह बात सुनकर पत्रकार दंग रह गया और बच्चों से जानना चाहा कि आखिर यह काम आप बच्चों से क्यों करवाते हैं? बच्चों का कहना है कि पुलिस वाले तथा किसी दूसरे व्यक्ति का इन पर संदेह ना हो इसलिए यह काम बच्चों से करवा रहे हैं। बच्चे इस कार्य को डर-डर के कर रहे हैं। बच्चे इतने डरे हुए हैं कि यह लोग अपने माता-पिता को भी नहीं बता रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योकि यह दुष्ट व्यक्ति हम बच्चों को धमकी दी हुई है कि अगर इस कार्य के बारे में किसी और को जानकारी मिली तो मैं तुम लोगों की बहुत पिटाई करूंगा और जो भी पैसा खाने-पीने के लिए देता हूं, वह भी नहीं दिया जाएगा। पत्रकार ने जब बच्चों से पूछा कि आप लोगों को इस कार्य को करने पर कितने पैसे मिलते हैं। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि पैकेट के हिसाब से हम बच्चों को पैसे मिलते हैं। अगर हम बच्चों ने 12 पैकेट बेच दिये तो एक सौ रुपए मिलते हैं। बच्चों ने कहा कि जो दुष्ट व्यक्ति बस्ती में नशीले पदार्थ खरीदने के लिए आते हैं, वह बस्ती में रह रही लड़कियों तथा महिलाओं को अश्लील नजरों से देखते हैं, जिससे बच्चों को बुरा लगता है। बच्चे चाहते हैं कि इन पर जल्द से जल्द कार्यवाही की जाए, ताकि बच्चे इस काम से आजाद्री पा सकें, और सुरक्षित रह सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

कड़ी मेहनत करने के बाद भी असफल होते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: हिना व रिपोर्टर: शम्भू, दक्षिण दिल्ली

रेलवे स्टेशन पर कामकाज करने वाले बच्चे अपने दुखों की दास्तां किसी से जिक्र नहीं कर पा रहे थे। आयेदिन यह पुलिस के डन्डे और पब्लिक की फटकार सुनते थे। जब उन बच्चों की मुलाकात बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर से हुई तो रेलवे स्टेशन पर हो रही समस्याओं के ऊपर विस्तार से चर्चा की। 15 वर्षीय बालक अपने बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि हम बच्चे अपने घर से इसलिए भागे थे क्योंकि हमारे घर में बहुत परेशानी थी। हमारे परिवार के सदस्य हम बच्चों पर अत्यधिक अत्याचार करते थे जिसके कारण हम बच्चों ने स्टेशन जैसी जिंदगी को चुना, ताकि हम इन परेशानियों से आजाद्री पा सकें। लेकिन यह क्या रेलवे स्टेशन पर आने के बाद भी हमें इस परेशानी से आजाद्री नहीं मिली। हम बच्चे आए दिन मुसीबत की ओर बढ़ते हुए नजर आ रहे हैं। वर्तमान में कुछ बड़े लड़के हैं, जो रेलवे स्टेशन पर कूड़ा-कबाडा बीनने के लिए आते हैं, वह हम बच्चों पर अत्याचार करते हैं जैसे कि जब हम अपना कूड़ा-कबाड़ा इक्ट्ठा किए गए स्थान पर मौजूद नहीं होते हैं तो वह बड़े लड़के हमारा इक्ट्ठा किया हुआ कूड़ा-कबाड़ा चोरी छुपे उठाकर चले जाते हैं, जिससे हम बच्चों को बहुत दुख होता है कि दिनभर कड़ी मेहनत करने पर भी कोई फल नहीं मिलता है। इस वजह से हम बच्चों को खाने पीने के लिए दरदर भटकना पड़ता है।

मजबूरी में करना पड़ा यह काम

रिपोर्टर: दीपक, पश्चिम दिल्ली

पश्चिम दिल्ली के कई भागों में पाया गया है कि ज्यादातर बच्चे लकड़ी का बुरादा छांटने का कार्य करते हैं। जब हमारे पत्रकार उन बच्चों से बातचीत करने उनके पास पहुंचे तो तरह-तरह की समस्याए सामने आई। 12 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बुरादा छांटने का काम इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे परिवार में काम करने वाले लोग बहुत कम हैं और खाने वाले लोग ज्यादा हैं अगर मैं काम नहीं करूंगा तो उन सबका गुजारा कैसे हो पाएगा। इसी तरह की समस्या कई सारे बच्चों ने बताई कि हमारे माता-पिता कोठी में कार्य करते है लेकिन उतना पैसा नहीं मिलता है, जिससे हमारा गुजारा कुशलपूर्वक हो सके। इस पीड़ा को बताते हुए एक बच्चे ने जिक्र किया कि हम जानते हैं कि इस कार्य को करने से हमारे परिवार का खर्चा चलता है लेकिन इस कार्य को करने में हम बच्चों को तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना कर पड़ता है जैसे कि बुरादा छांटते समय धूल, मिट्टी काफी निकलती है, जो हमारे आंख, मुंह में चली जाती है, जिसकी वजह से रात को सोते समय काफी खांसी आती है। पत्रकार ने बच्चों से सवाल किया कि आप बच्चे बुरादा छांटकर क्या निकालते हो ? बच्चों ने बताया कि इस स्थान पर ज्यादातर लकडी.से टेबल, कुसी, बेड आदि बनाए जाते हैं, इन सभी चींजो को बनाने के लिए मिस्त्री कील का प्रयोग करते हैं और जो कील टेड़े हो जाते हैं, उसे फेंक देते हैं। वही हम बच्चे बुरादे में से निकालते हैं। लेकिन हम बच्चे इस कार्य को करने में असमर्थ महसूस करते हैं। हम चाहते है कि हमारे परिवार वालों को कोई अच्छा कार्य मिल जाए जिसकी वजह से हम बच्चों को ऐसा कार्य ना करना पड़े।

कैसे करें इस गंदगी का सामना?

बातूनी रिपोर्टर: प्रियंका व रिपोर्टर: पूनम, आगरा

हम जिस स्थान के बारे में जिक्र कर रहें हैं, उस स्थान का नाम इस खबर में गोपनीय रख रहे हैं। इसलिए हम आप सभी से क्षमा चाहते हैं। इस स्थान पर बहुत पुराना एक सरकारी स्कूल है, यहां बस्ती में रहने वाले सभी बच्चे पढ़ाई-लिखाई करने के लिए जाते थे, लेकिन वर्तमान में बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं, क्योंकि इस स्कूल के इर्द-गिर्द बहुत सारी झुग्गी बस्ती हैं। वह लोग अपने घरेलू पदार्थ स्कूल के पास ही डालते हैं। जिसकी वजह से गंदगी बहुत तेजी से फैलती जा रही है। बस्ती वालों से बातचीत करने पर पता चला कि इनकी बस्ती में एडीए के कार्यकर्ता कूड़ा कचरा उठाने के लिए नहीं आते हैं। इसी मजबूरी में यह लोग स्कूल के पास ही कूड़ा कचरा फेकते हैं। इस वजह से फेके हुए कूड़े-कचरे में से बहुत गंदी बदबू आती है। इसलिए स्कूल के अंदर कक्षा रूम में पढ़ाई-लिखाई कर रहे मासूम बच्चे इस कूड़े-कचरे की बदबू सहन नहीं कर पाते हैं। इस बदबू के कारण बच्चे दिन पर दिन बीमार होते नजर आ रहे हैं। इस पीड़ा को देखते हुए स्कूल प्रधानाचार्य जी ने एडीए कार्यालय में एक पत्र लिखकर भेजा, लेकिन अभी तक इस समस्या का हल नहीं निकला है। अब बच्चे स्कूल जाना भी बंद करने लगे हैं। इस स्थान पर रहने वाले लोग बहुत चिंतित हैं और यही गुहार लगा रहे हैं कि कोई व्यक्ति इनको इस परेशानी से छुटकारा दिला पाए।

बच्चों की कड़ी मेहनत भी हो रही असफल

बातूनी रिपोर्टर: प्रियंका व रिपोर्टर: पूनम, आगरा

आगरा भ्रमण के दौरान पत्रकारों को पता चला कि कुछ मासूम बच्चे ऐसे भी हैं, जो अपने परिवार के गुजारे के लिए रात-दिन कड़ी मेहनत करते हैं लेकिन फिर भी उनकी मेहनत कामयाब नहीं हो पाती। आइए हम इस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। जब हमारे पत्रकार उन बच्चों से मिले तो बच्चों ने अपना दुख-दर्द विस्तार से बताया कि हम बच्चे समूह बनाकर अलग-अलग प्रकार के सामान बेचने के लिए बाहर जाते हैं। जैसे कि हण्टर बेचना, कांच के ग्लास बेचना व वाइपर बेचना आदि। हमने ऊपर समूह बनाने की चर्चा इसलिए की है, क्योंकि जिस स्थान पर बच्चे सामान बेचने के लिए जाते हैं, वहां तरह-तरह की परेशानियां आती हैं जिससे यह मुकाबला कर सकें। परन्तु इतनी कठिनाइयों से जूझने के बाद भी यह बच्चे सामान बेचने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं।

13 वर्षीय किशन कहता है कि हम बच्चे पहले कुशलपूर्वक अपने कामकाज कर रहे थे। लेकिन अब हम बच्चे रोजमर्रा की जिंदगी जी रहे हैं, क्योंकि हम बच्चे अपने कामकाज की वजह से पूरे दिन व्यस्त रहते हैं। हम बच्चे आयेदिन सुबह आठ बजे घर से निकलते हैं, तो रात को आठ-नौ बजे तक अपने घर को लौटते हैं। इस बीच हमारे घर पर क्या होता है, हमें कुछ अता-पता नहीं रहता है। हमारे माता-पिता भी अपने कामकाज से बाहर चले जाते हैं और हमारे छोटे-छोटे भाई-बहन, जो इधर-उधर खेलते हैं, जिसके कारण घर

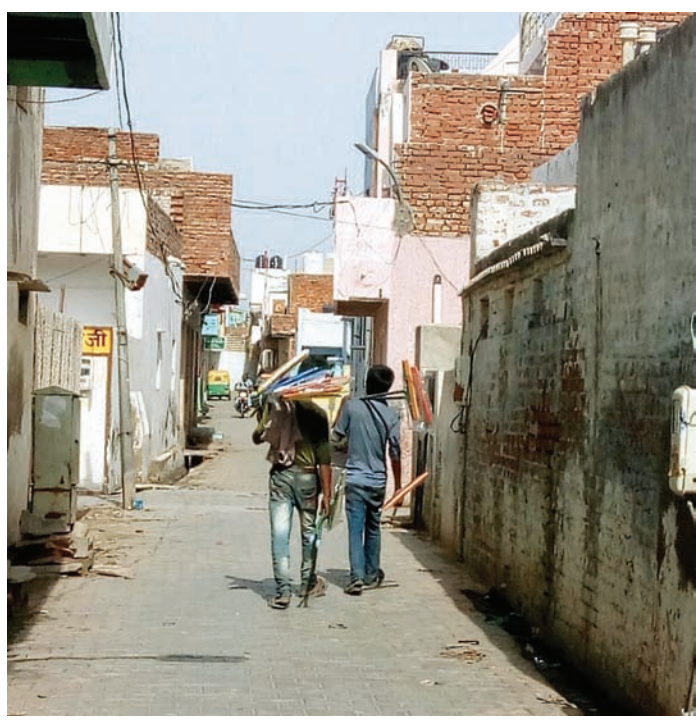

के अंदर रखे हुए सामान कुछ दुष्ट लोग चोरी कर लेते हैं।

15 वर्षीय गौतम ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हमारा परिवार बहुत गरीब है। कड़ी मेहनत करने के बाद भी हमारे माता-पिता गुजारे लायक पैसा इक्ट्ठे नह ीं कर पाते हैं। इसकी वजह से हमारे परिवार का गुजारा कुशलपूर्वक हो सके। इसी कारण मैंने खुद यह निर्णय लिया कि मैं भी दूसरे बच्चों की तरह कामकाज करूंगा और अपने परिवार को गरीब स्थिति से छुटकारा दिलवाऊंगा, लेकिन काफी प्रयास के बाद भी इस कठिन परिस्थिति से निकलने का कोई जरिया नहीं मिला। हम दिन पर दिन इस गरीब स्थिति से जूझ रहे हैं। हम चाहते हैं कि कोई हमारी सहायता करे और हमारे माता-पिता को ठीक से जीवन जी सकने लायक रोजगार दिलवा दे, ताकि हम बच्चों को इस काम से छुटकारा मिल सके और हम बच्चे पढ़-लिख कर सम्मानजनक जीवन जीने लायक बन सकें।

कैसे मिलेगी चूहों से आजाद्री?

बातूनी रिपोर्टर: गौरव व रिपोर्टर: शम्भू, नोएडा

नोएडा अम्रपाली बस्ती के आस-पास लगभग 1500 से भी अधिक झुग्गी झोपड़ी हैं। उस बस्ती में रहने वाले सभी परिवार बहुत गरीब हैं। वह परिवार अपनी गुजर बसर करने के लिए दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं। तब जाकर एक सप्ताह का राशन जमा कर पाते हैं। लेकिन वर्तमान में यह सभी परिवार वाले बहुत दुखी हैं, क्योंकि उस स्थान के आस-पास जंगल है, जिसमें खासकर चूहे ज्यादा पल रहे है जिसकी वजह से वह चूहे उनके घरों में प्रवेश कर जाते हैं और घर में रखा हुआ सारा का सारा राशन खराब कर देते हैं। माता-पिता अपनी दुखों की दास्तां बताते हुए कहते हैं कि जब हम अपने काम करने के लिए बाहर जाते हैं तो हम अपनी झुग्गी-झोपड़ी को बंद करके जाते हैं, जिसके कारण हमारी झुग्गी-झोपड़ी में अंधेरा हो जाता है। अंधेरे का फायदा उठाकर चूहे आक्रमण कर देते हैं। दुख की बात यह

है कि हमारी झुग्गी का फर्श मिट्टी का है इसलिए चूहे आयेदिन बिल बना देते हैं जिसकी वजह से हमें भय लगा रहता है कि कहीं उस बिल में कोई और जानवर स्थान ग्रहण ना कर ले; क्योंकि जिस जंगल से चूहे आते हैं। उस जंगल में सांप भी रहते हैं। इसलिए हम उस बिल को बंदकर देते हैं। 12 वर्षीय बालक ने बताया कि भइया जब हमारे माता-पिता झुग्गी में खाना बनाकर रखकर जाते हैं, चूहे आकर सारा खाना खराब कर देते हैं। जिसकी वजह से हमको मजबूरन वही चूहे का झूठा खाना खाना पड़ता है। 13 वर्षीय बालिका का कहना है कि जब हम बच्चे रात को गहरी नींद में सो रहे होते हैं, तो चूहे हमारे शरीर के किसी भी भाग में काट लेते हैं। इतना ही नहीं चूहों के अत्याचार ने बस्ती में रहने वाले सभी बच्चों की बुरी दशा कर दी है। सुनने में आया है कि बच्चे कितनी मुश्किल से पैसे इक्ट्ठा करते हैं और वह नए वस्त्र खरीदते हैं जिन्हें वे झुग्गी में रखते है, उसके अगले दिन वह वस्त्र कुतरे हुए नजर आते हैं। माता-पिता ने इस समस्या को देखकर यह निर्णय लिया था कि चूहेदानी में फसाकर सारे चूहों को झुग्गी से भागाऊंगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह उपाय भी नाकामयाब हो गए। चूहे को चूहेदानी में फसा देने के पश्चात भी वह वापस झुग्गी में आकर ऊधम मचाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खोज निकाला पत्रकारों ने सही नाम न बताने का रहस्य

रिपोर्टरः शम्भू

पत्रकार ने एक दौरा कर जानना चाहा कि आखिर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से नाम पूछने पर वह हर व्यक्ति को गलत नाम क्यों बताते है? आइए विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं। ऐसी क्या वजह है जो हर एक सड़क व झुग्गी पर रहने वाला बच्चा अपना गलत नाम इस्तेमाल करता है? सबसे पहले आपको बता दूं कि इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए दिल्ली एवं गुड़गांव के विभिन्न स्थानों पर पत्रकार ने दौरा किया, जहां अधिक संख्या में सड़क एवं कामकाजी बच्चे पाए जाते हैं। वहां बच्चों के साथ बैठक करने पर पता चला कि यह बच्चे पूछे जाने पर अपना गलत नाम इसलिए बताते हैं, ताकि इन्हें किसी भी तरह की परेशानी ना हो। क्योंकि यह बच्चे अपना पेट पालने के लिए स्टेशन तथा बस अड्डा के ईद-गिर्द काम करते हैं और वहीं रहते हैं, अगर किसी व्यक्ति को इन बच्चों ने अपना असली नाम बताया, तो यह किसी भी मुसीबत के शिकार हो सकते हैं। स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताया कि हम बच्चे स्टेशन पर रहते हैं

और इस स्टेशन पर बहुत ऐसे लोग हैं, जो जेब काटने तथा चोरी के कार्य करते हैं। अगर उन्हें हम अपने असली नाम बताते हैं, तो वह चोरी करेंगे और नाम हम बच्चों का लगा देगें। 15 वर्षीय बालक का कहना है कि कुछ बच्चे, जो अपने घर का वातावरण खराब होने की वजह से स्टेशन पर भागकर आ जाते हैं, अगर हम स्टेशन पर असली नाम से जाने जाएंगे, तो वह लोग हमें दोबारा घर ले जाकर हम बच्चों पर अत्याचार करेंगे। इसलिए हम बच्चे अपने असली नाम को गुप्त रखते हैं। बच्चों ने अपना सुझाव रखते हुए कहा ऐसा भी नहीं कि हम किसी को अपना असली नाम नहीं बताते हैं। जिस व्यक्ति पर हम बच्चे विश्वास रखते हैं, उनको ही हम अपना सही नाम बताते हैं, ताकि हम सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चे सुरक्षित रहें।

क्या ऐसे भी होते हैं माता-पिता?

रिपोर्टरः ज्योति, दक्षिण दिल्ली

हमारे समाज में कुछ ऐसे माता-पिता हैं, जो खुद तो काम नहीं करते हैं लेकिन परिवार का खर्चा चलाने के लिए छोटे-छोटे मासूम बच्चों से जबरन भीख मंगवाते हैं। यह खबर जब हमारे पत्रकार को पता चली तो पत्रकार उन बच्चों के पास जा पहुंचा, तभी उस बच्चे ने अपनी पीड़ा बताते हुए कहा कि हमारे माता-पिता कुछ कार्य नहीं करते हैं। वह घर में ही बैठे रहते हैं। हमारे पिता पूरे दिन दोस्तों के साथ जुआं खेलते रहते हैं। उनको अपने घर से कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें सिर्फ तीन वक्त का भोजन चाहिए और नशा करने के लिए शराब व जुआं खेलने के लिए पैसा। उन्हें यह सारी चींजें नहीं मिलती हैं, वे तो घर में लड़ाई-झगड़ा करना शुरू कर देते हैं। 13 वर्षीय बालिका अपनी सहेली की पीड़ा बताते हुए कहती है कि मेरी सहेली के पिता ने जुआं खेलने के लिए पैसे की मांग की, लेकिन दुर्भाग्यवश मेरी सहेली की मम्मी के पास उस समय पैसे नहीं थे, तो मेरी सहेली के पिता ने सहेली की मम्मी को बहुत बुरे तरीके से मारा और मेरी सहेली को भी मारने के लिए दौड़े, तब तक हमलोग भाग निकले। यह सिर्फ एक दिन की समस्या नहीं है। यह समस्या हमारे साथ आए दिन होती रहती है। इस परिस्थिति से जूझते हुए हम बच्चे सड़क पर भीख मांगने के लिए जाते हैं। पब्लिक हम बच्चों को भीख नहीं देती है, उन्हे यह लगता है कि हम बच्चों को भीख मांगने का शौक है। इसलिए हम बच्चे भीख मांग रहे हैं और जब हम अपनी परेशानी अपने माता-पिता को बताते हैं तो हमारे माता-पिता हम बच्चों पर ही अत्याचार करते हैं।

रहने का ठिकाना ना होने पर सुननी पड़ती है डांट-फटकार

रिपोर्टरः शम्भू ,गुड़गांव

पत्रकार ने सपोर्टर ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, और अपनी समस्याओं के बारे में विस्तार से बताया। गुड़गांव की एक बस्ती। इस बस्ती में रहने वाले बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। क्योंकि इन बच्चों का यह कहना है कि हमारा रहन-सहन का कोई ठिकाना नहीं है। क्योंकि काम की तलाश में माता-पिता अपना ठिकाना बदलते रहते हैं। हमारे माता-पिता इस पीड़ा से जूझते हुए भी स्कूल में दाखिला

करवा देते हैं लेकिन स्थान बदलने की वजह से हम रोजाना स्कूल नहीं जा पाते हैं। इसकी वजह से हमारे अध्यापक हम बच्चों पर क्रोध जाहिर करते हैं। बच्चों ने अपनी पीड़ा बताते हुए सुझाव दिया कि वर्तमान में हम में से ही एक बच्चा काफी दिनों के बाद अपने गांव से बस्ती वापस आया और जब वह अपने स्कूल पहुंचा, तो अध्यापक बहुत क्रोधित हुए और कहने लगे कि तुम लोगों का कोई ठिकाना नहीं है, तो पढ़ाई-लिखाई कहां से करोगे? इस बात का एहसास करते हुए बच्चे ने स्कूल की दास्तां अपने माता-पिता को सुनाई तो माता-पिता भी कोई जवाब नहीं दे पाए। क्योंकि माता-पिता यह जानते हैं कि अध्यपाक का क्रोधित होना जायज है। माता-पिता भी क्या कर सकते हैं? अगर वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर कामकाज करने के लिए नहीं जाएगें, तो इनके घर का खर्चा कहां से चल पाएगा। मगर इसका असर बच्चों पर दिखाई देता है, क्योंकि अध्यापिका के क्रोधित व्यवहार की वजह से बच्चे स्कूल नहीं जाना चाहते हैं और बच्चे चाहते हैं कि काश उनका भी कोई एक ठिकाना होता और वह बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह रोजना स्कूल जाते और पढ़ लिखकर कुछ बन पाते।

दर्जी से परेशान मासूम बच्चों की सहयोग की गुहार

रिपोर्टरः शम्भू ,गुड़गांव

बादशाहपुर, गुड़गांव की बस्ती में एक दर्जी है, जो वस्त्र सिलने का कार्य करता है वह दर्जी सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बहुत घृणा की नजरों से देखता है। बातूनी रिपोर्टर के दौरान पता चला कि यह दर्जी सड़क एवं कामकाजी बच्चों को देखते ही गाली-गलौज करने लगता है। इस स्थान पर रहने वाले बच्चों का कहना है कि हमने उस दर्जी से बातचीत की कि आप हमारे साथ इस तरह का बर्ताव क्यों कर रहे हो? तो वह इस बात को सुनकर क्रोधित होने लगे और हम बच्चों से अश्लील शब्दों में बातचीत करने लगे। हम बच्चों को उसका व्यवहार बहुत बुरा लगता है। इसलिए हम बच्चों ने सामाजिक संस्था से आने वाले अध्यापकजी, जो हम बच्चों को पढ़ाते-लिखाते हैं, उनसे अपनी परेशानियों के बारे में जिक्र किया, परन्तु फिर भी इस समस्या का समाधान नहीं हो सका। क्योंकि जब हमारे अध्यापक जी उस दर्जी से बातचीत करने पहुंचे तो वह दर्जी हमारे अध्यापकजी से ही गाली-गलौज करने लगा। फिर भी हमारे अध्यापक जी ने उस दर्जी को पूरी तरह समझाने की कोशिश की कि आप बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार मत कीजिए लेकिन वह इन सभी बातों को ना सुनते हुए अध्यापक जी को ही धमकी देने लगा। तूं ज्यादा बन रहा है, इस स्थान से अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर भाग जा, नहीं तो तुझे बहुत मारूंगा। इस बस्ती में रहने वाले बच्चों का कहना है कि यह दर्जी अक्सर कूड़ा-कबाड़ा बीनने वाले बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार करता है। इसलिए हम बच्चे आप सभी से यही अपील करते हैं कि इस दर्जी के खिलाफ कोई ना कोई कानूनी कारवाई की जाए, तभी हम बच्चे कुशलपूर्वक पढ़ाई-लिखाई कर सकेंगं। क्योंकि इस दर्जी के भय की वजह से काफी सारे बच्चे इस स्थान पर पढ़ाई-लिखाई करने के लिए नहीं आ रहे हैं। हमने तो पूरी कोशिश की थी, इस दर्जी को समझाने की, पर इनमें कोई बदलाव दिखता हुआ नजर नहीं आ रहा है। हम चाहते हैं कि पाठकगण हमारी इस खबर के माध्यम से मदद करें, ताकि हम बच्चे इस पीड़ा से आजाद्री पा सके।

माहौल को देखकर हम बच्चों पर पड़ा गलत असर

बातूनी रिपोर्टरः जहांगीर, सोनू व रिपोर्टरः शम्भू,नोएडा, गुड़गांव

पत्रकार ने दिल्ली एवं गुड़गांव और नोएडा में दौरा किया तो पता चला कि लगभग 450 ऐसे बच्चे हैं, जो दिनभर जुआं खेलने में लिप्त रहते हैं। पत्रकार इन बच्चों से मिला और यह जानने की कोशिश की कि यह बच्चे इतनी छोटी आयु में जुआं खेलना कैसे सीख गये ? 12 वर्षीय बालक ने बताया कि भइया हम बच्चों के घर के आस-पास का वातावरण ठीक नहीं है। यहां पर अक्सर लोग दिनभर जुआं खेलते रहते हैं। इनको

शेष पृष्ठ 8 पर

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या यह कर सकते हैं आप?

रिपोर्टर: ज्योति, पश्चिम दिल्ली

यह दर्दनाक खबर 11 वर्षीय अमन की है, जो पश्चिम दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रहता है। अमन अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए चाय की दुकान पर काम करता है, तब जाकर उसके परिवार का गुजारा हो पाता है। अमन सड़क एवं कामकाजी बच्चों की हर वक्त मदद करने के लिए तैयार रहता है। वर्तमान में अमन बालकनामा पत्रकार टीम का बातूनी रिपोर्टर है। अमन अपने आस-पास यह ध्यान रखता है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस पीड़ा में जी रहे हैं। क्योंकि अमन ने सड़क की जिंदगी बेहद करीब से देखी है। वर्तमान में अमन के साथ एक ऐसी दुर्घटना हुई, जो इतिहास बन गई। अमन ने बताया कि कुछ दिन पहले मैं अपने घरेलू सामान खरीदने के लिए बाजार गया था और जब मैं बाजार से लौट रहा था, तो उसने देखा कि दो बच्चे रिंग रोड से होते हुए अपने घर लौट रहे थे और उसी सड़क पर एक बैटरी रिक्शा वाला नशे में धुत रिक्शे को इधर से उधर ले जा रहा था और वह बच्चे भी आपस में बातचीत करते हुए जा रहे थे। वह रिक्शे की ओर ध्यान नहीं दे रहे थे। तभी वह दौड़कर गया और उन दोनों को रिक्शे से दुर्घटना होने से तो बचा लिया, पर खुद अमन को उस रिक्शे की वजह से चोट लग गई थी। तभी उस सड़क से गुजरने वाले सभी लोगों ने मेरी काफी तारीफ की और मुझे अस्पताल लेकर गए और मेरी मरहम पट्टी करवाई। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं लेकिन मुझे एक बात कहनी है कि आखिर लोग वाहन चलाते समय नशीले पदार्थ का सेवन ना करें। हमें उम्मीद है कि इस खबर को पढ़ने के बाद लोग शराब पीकर वाहन चलाना जरूर बंद कर देंगे।

माहौल को देखकर हम बच्चों पर पड़ा गलत असर

पृष्ठ 7 का शेष

देखकर बच्चे भी जुआं खेलना सीख गये हैं। अधिकतर गुड़गांव के बच्चे जुएं की लत में उलझे पाए गए। बच्चे अपना स्कूल छोड़कर जुआं खेलने लग जाते हैं और पढ़ाई करने स्कूल नहीं जाते हैं। अपने माता-पिता से बोलते हैं कि आज स्कूल की छुट्टी है और घर पर भी जुआं खेलते हैं। इन बच्चों के माता-पिता कामकाज में लिप्त रहते हैं। इस वजह से अपने बच्चों का पूरी तरह से ख्याल नहीं रख पाते। 13 वर्षीय बालिका ने बताया कि यहां पर बच्चे जुआं खेलने के लिए गलत कदम भी उठा लेते हैं। बच्चे अपने घरों का सामान बेच देते हैं और उससे मिले पैसों से जुआं खेलते हैं। जो बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, वह अपने माता-पिता को पैसे नहीं देते। 14 वर्षीय बालक ने बताया कि यह बच्चे अपने आस-पास का माहौल देखकर जुआं सीख गए हैं। यदि बच्चों को वातावरण सही मिलेगा तो बच्चे कभी गलत नहीं सीखेंगे।

यह खबर पढ़कर सहयोग हेतु क्या आप बढ़ेंगे अमित की ओर?

बातूनी रिपोर्टर: अमित व रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

आइए जानते हैं 12 वर्षीय अमित के बारे में कि वह किस प्रकार अपने परिवार की जिम्मेदारी उठा रहे हैं। हमारे पत्रकार के माध्यम से पता चला कि अमित लखनऊ की एक बस्ती में रहता है। अमित के परिवार में कोई कमाने वाला ना होने के कारण अपने परिवार की जिम्मेदारियां खुद उठा रहा है। हम पहले अमित के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। अमित के परिवार में कुल पांच सदस्य हैं- माता-पिता, बुजुर्ग हैं जिसके कारण वह कामकाज नहीं कर पाते हैं। अमित के दो छोटे भाई-बहन जैसे-तैसे स्कूल जाते हैं। पहले अमित भी स्कूल जाया करता था लेकिन परिवार की स्थिति खराब होने के कारण उसने स्कूल जाना छोड़ दिया। वह आजकल सब्जियां बेचने का कार्य कर रहा है। अमित ने अपने मन की बात बताते हुए कहा कि जब मैं स्कूल से आते-जाते हुए बच्चों को देखता हूं, मुझे भी स्कूल जाने की जिज्ञासा होती है लेकिन कामकाज की वजह से मैं स्कूल नहीं जा पा रहा हूं लेकिन इतनी कठिनाइयों से जूझते हुए मैं अपने आपको खुश महसूस करता हूं, क्योंकि मेरे दोनों भाई-बहन स्कूल जा रहे हैं। मेरा सपना है कि जैसे मेरे भाई-बहन पढ़ाई-लिखाई करने के लिए स्कूल जा रहे हैं, मैं भी उनकी तरह स्कूल जाऊं। मेरा यह सपना तब संभव होगा, जब आप लोग मेरी मदद करेंगे। आपकी एक सोच मुझे शिक्षा की ओर बढ़ा सकती है। मुझे आप लोगों से यह पूरी उम्मीद है कि इस खबर के माध्यम से आप मुझे पूरी तरह से सहयोग करेंगे।

क्या आप इस पीड़ित बच्ची की करेंगे मदद?

बातूनी रिपोर्टर: हीना व रिपोर्टर: शम्भू ,दक्षिण दिल्ली

11 वर्षीय उमरा जो सराय काले खां में अपने परिवार के साथ रैन बसेरे में रहती है, अपनी दुखभरी दास्तां बताते हुए कहती हैं कि उसके परिवार में माता-पिता, तीन बहनें और एक भाई है। मेरी सबसे छोटी बहन जो मात्र 6 वर्षीय है, उसके दिल में बचपन से ही छेद है। मेरे माता-पिता उसका इलाज कराने में असमर्थ हैं, क्योंकि हमारे माता-पिता बहुत गरीब हैं। जैसे तैसे हमारे परिवार का गुजारा चल जाता है। लेकिन दुख की बात यह है कि मेरे घर में कामकाज करने वाले कोई बड़े भाई-बहन नहीं हैं। सिर्फ माता-पिता ही कामकाज करते हैं। जिस से हमारे घर का खर्चा ही चल पाता है। इतनी कठिनाईयों से जूझते हुए भी हमारे माता-पिता हमारी छोटी बहन का इलाज करवा रहे हैं। लेकिन जब कभी-कभी आचानक मेरी बहन को दौ़रे पड़ जाते हैं, जिसके चलते उसे तत्काल अस्पताल ले जाना पड़ता है। हमारे माता-पिता के पास इतने पैसे नहीं होते कि वह मेरी छोटी बहन का इलाज करवा सके। मगर फिर भी वह अन्य व्यक्ति से कर्ज लेकर उसका इलाज करवाते हैं। इलाज के बाद भी मेरी छोटी बहन ठीक नहीं हो पाई है, इसलिए घर का कोई भी व्यक्ति उसे अकेला छोडने से घबराता ह। अक्सर महीने में एक, दो बार अस्पताल के चक्कर लग ही जाते हैं। इस बीमारी से जुझ रही उमरा की छोटी बहन भी अपनी हिम्मत हार चुकी है। अब वह यह बोलती है कि मुझे मर जाने दो, क्योंकि वह अपने माता-पिता की तकलीफ नहीं देख सकती। उमरा के माता-पिता का यह कहना है कि इस खबर को पढ़ने वाले लोग कृपया हमारी मदद करें, ताकि हमारी बच्ची को इस बीमारी से छुटकारा मिल सके।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

प्रशिक्षण पाकर खुश हैं बालकनामा के नए पत्रकार

डेनमार्क मीडिया के साथ अपने अनुभव शेयर करते बातूनी रिपोर्टर

खबरों को लिखने का अभ्यास करते बातूनी रिपोर्टर

संगीत कला की ओर कदम बढ़ाते हुए नन्हें-मुन्हें बालसाथी

जिला न्यायालय के बारे में जानकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों में बढ़ी जागरूकता

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471